प्रियंका चोपड़ा
द रेड-हॉट बायोग्राफी

प्रियंका चोपड़ा अनसेंसर्ड और

अनधिकृत

यह विशुद्ध रूप से अनौपचारिक जीवनी है।

प्रियंका चोपड़ा के सबसे हॉट आइटम सॉन्ग जो आपको मदहोश कर देंगे। RAM CHAHE LEELA - RAM LEELA
सलाम और इश्क़ुम - गुंडे
तुमने मुझे हिलाकर रख दिया - बिल्लू
DESI GIRL - DOSTANA
यहीं , अभी इसी वक्त - ब्लफमास्टर
प्रियंका के सबसे मसालेदार रोमांटिक मुलाकातें युवा प्रेम - असीम मर्चेंट
हरमन के प्रति आसक्ति

□□ □□ □□□□□ - □□□□ □□□ □□□□□
□□□□ □□□□ □□□□ - □□□□□ □□□□
□□ □□ □□□□□□□□
□□□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□ □□□□□□□□□□
□□□□□□□□□ □□□□
□□□□□□□ □□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□
□□□□ □□□ □□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□
□□□□□
2006
2007
2008
□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□
□□ □□□□ □□□□□
2012
2013
2014
2015
2016
□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□ □□□□□□□
□□□□□

विषयसूची

प्रियंका चोपड़ा के सबसे हॉट आइटम सॉन्ग जो आपको मदहोश कर देंगे। RAM CHAHE LEELA - RAM LEELA
सलाम और इश्क़ुम - गुंडे
तुमने मुझे हिलाकर रख दिया - बिल्लू
DESI GIRL - DOSTANA
यहीं, अभी इसी वक्त - ब्लफमास्टर

प्रियंका के सबसे मसालेदार रोमांटिक मुलाकातें युवा प्रेम - असीम मर्चेंट
अक्षय कुमार की आग
हरमन के प्रति आसक्ति
आग से खेलना - राजा खान विवाद
सबसे बड़ा राज़ - शाहिद कपूर

आज की प्रियंका
दुनिया की लाडली

हॉलीवुड की कहानी

आगामी परियोजनाएँ

प्रारंभिक जीवन

सौंदर्य रानी

सेल्युलाइड की दुनिया में प्रवेश अपनी जगह बनाना
सफलता का पहला स्वाद

□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□

□□□□□

2006

2007

2008

□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□

□□ □□□□ □□□□□

2012

2013

2014

2015

2016

□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□

□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□□

प्रियंका चोपड़ा के सबसे हॉट आइटम गाने आपको मदहोश कर देंगे!
किनारा

आइए, प्रियंका के कुछ सबसे आकर्षक फिल्मी अवतारों पर एक नज़र डालते हैं। प्रियंका ने अपने विभिन्न अवतारों में पर्दे पर आग लगा दी है। हालांकि, उनके सबसे हॉट गाने हाल ही में आए हैं और यह सूची इस तथ्य को दर्शाती है। प्रियंका धीरे-धीरे एक परिपक्व और आकर्षक अभिनेत्री के रूप में उभरी हैं, जो जोश और ऊर्जा से भरपूर हैं। उनके भाव भी अब एक ऐसी महिला के हैं जो जानती है कि उसे क्या चाहिए और उसे हासिल करके रहेगी। उनकी चंचलता और उत्साह का मेल उन्हें एक ऐसी अभिनेत्री बनाता है जिसे हल्के में नहीं लिया जा सकता।
Ram Chahe Leela - Ram Leela

संजय लीला भंसाली की फिल्म राम लीला में प्रियंका ने अपने सबसे नए और सबसे आकर्षक अवतार से सबका दिल जीत लिया। रोमियो और जूलियट की कहानी पर आधारित इस फिल्म में रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण ने दो प्रेमियों की भूमिका निभाई थी। आइटम गर्ल के रूप में प्रियंका ने आधुनिक मुजरा नृत्य किया, जिसमें जटिल डांस स्टेप्स शामिल थे। गाने में उन्होंने अपनी अदाओं और मोहक अदाओं से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस वीडियो पर ध्यान दें: प्रियंका का ब्लाउज का बटन बंद करने का दृश्य। अपनी बेबाक कामुकता को उजागर करने के उद्देश्य से, प्रियंका बड़े ही चंचल अंदाज में ब्लाउज का खुला बटन बंद करती हैं, और ऐसा दिखाती हैं मानो यह एक सामान्य सी बात हो, जिससे इसमें और भी अधिक आकर्षण जुड़ जाता है।

अरे, मैं कितनी मूर्ख थी! क्या वह खुला हुआ था? आप पर शांति हो - गुंडे

फिल्म 'गुंडे' में प्रियंका 1970 के दशक के कलकत्ता में एक कैबरे डांसर का किरदार निभा रही हैं। 'अस्सलाम-ए-इश्कुम' गाने में सारा ध्यान प्रियंका पर केंद्रित है। यह पुराने आइटम गानों से एक महत्वपूर्ण बदलाव है। आमतौर पर, आइटम गाने फिल्म में सिर्फ एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं, जहां हीरो आइटम गर्ल से आकर्षित होता है। इस गाने में भले ही दोनों मुख्य कलाकार मौजूद हों, लेकिन दर्शकों के मन में कोई संदेह नहीं रहता कि असल में शो का असली हीरो कौन है। प्रियंका पूरे गाने में कई आकर्षक पोशाकों में नजर आती हैं। मेरी पसंदीदा पोशाक है छोटी मौलिन रूज ड्रेस, छोटे बाल और छोटा सा हेयरपीस, जो उन्हें 1920 के दशक की मोहक अदाकारा जैसा लुक देता है।

इसे देखें: प्रियंका के अलग-अलग परिधानों और उनकी दिव्य अदाओं के लिए।

मौलिन रूज यहीं पर है
तुमने मुझे झूमने और डगमगाने पर मजबूर कर दिया - बिल्लू

जब पूरी फिल्म इंडस्ट्री में उनके अफेयर की अफवाहें तेजी से फैल रही थीं, तब प्रियंका ने शाहरुख खान की फिल्म में एक आइटम नंबर में काम किया। फिल्म में करीना कपूर और दीपिका पादुकोण के भी आइटम नंबर थे। लेकिन कामुकता की बात करें तो इस गाने में प्रियंका के परफॉर्मेंस का कोई मुकाबला नहीं था। एक मोहक, कामुक हसीना का किरदार निभाते हुए प्रियंका ने कई मोहक पोज दिए और उनका लुक इतना सहज था कि मानो उन्हें पता हो कि वो कैसी दिख रही हैं। उनकी कामुकता साफ झलक रही थी और यह देखा जा सकता था कि शाहरुख खान, चाहे कितने भी प्रोफेशनल क्यों न हों, अपने सामने खड़ी उस आकर्षक हसीना के आकर्षण में फंस गए।

इसे देखें: प्रियंका के सुडौल पैर विभिन्न सेक्सी आउटफिट्स में।

भाग्यशाली कमीने
Desi Girl - Dostana

दुनिया भर में अरबों लोगों द्वारा सुना और गलत समझा गया गाना 'देसी गर्ल' ही वह गाना था जिसने प्रियंका को घर-घर में मशहूर कर दिया। इस गाने में उन्हें देसी गर्ल के रूप में दिखाया गया था। बहुत कम देसी गर्ल्स प्रियंका की तरह इस गाने में कपड़े पहनती हैं, और इसका एक कारण भी है। इतनी कामुकता शायद जल्द ही गैरकानूनी हो जाएगी। उनके सम्मोहक नृत्य और उससे भी अधिक सम्मोहक मुस्कान अभिषेक बच्चन और जॉन अब्राहम के हैरान चेहरों को भी विश्वसनीय बना देती हैं।

इसे देखें: प्रियंका के ठुमके और उनकी बेमिसाल जीवन-प्रसंगता के लिए।

□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□

□□□□, □□□ □□□ □□□□ - □□□□□□□□□□

□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□, □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□

□□□ □□□□ □□□□□: □□□□□□□□ □□ □□ □□□□, "□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□□□ □□□□□□□□

BCCL

लेकिन वो अच्छी लड़की है !

प्रियंका के सबसे रोमांचक रोमांटिक किस्से

आम तौर पर, प्रियंका किसी भी तरह के विवाद से दूर रहती हैं। अपने हक के लिए आवाज़ उठाने के अलावा (जिसके बारे में हम आगे पढ़ेंगे), वह विवादों से अछूती ही हैं। उनके प्रेम प्रसंगों के बारे में बहुत कम ही सार्वजनिक उपस्थिति और अक्सर होने वाली गपशप और अफवाहों से ही पता चलता है। हालांकि, हमने आपके लिए उनके कुछ सबसे चटपटे प्रेम प्रसंगों का पता लगाया है। प्रियंका ने इनमें से अधिकांश की न तो पुष्टि की है और न ही खंडन किया है, इसलिए इन पर विश्वास करना या न करना आप पर निर्भर है।
युवा प्रेम - असीम मर्चेंट

जैसा कि हम सब जानते हैं, प्रियंका ने अपने करियर की शुरुआत मॉडलिंग से की थी। उनकी फिल्म 'फैशन' की कहानी से मिलती-जुलती इस घटना में, प्रियंका को एक साथी मॉडल से प्यार हो गया, लेकिन बाद में उन्होंने उसे छोड़ दिया क्योंकि उनका करियर उनके प्रेमी से बिल्कुल अलग दिशा में आगे बढ़ गया था। असीम मर्चेंट, जो उनके प्रेमी हैं, हाल ही में प्रियंका से जुड़े एक और विवाद में फंस गए हैं। उन पर आरोप है कि वे एक ऐसी फिल्म बना रहे हैं जो प्रियंका की आत्मकथा होने का दावा करती है और जिसमें उनके अब अलग हो चुके मैनेजर का भी जिक्र है। असीम ने अब स्पष्ट किया है कि फिल्म बनाने के पीछे उनका कोई गलत इरादा नहीं था और उन्होंने कहा है कि वे कभी भी जानबूझकर प्रियंका को चोट नहीं पहुंचाएंगे। वाकई, ये बहुत अच्छी बात है। हालांकि, प्रियंका ने इस पूरे मामले पर चुप्पी साध रखी है।

अभी प्लास्टिक सर्जरी करवाने के लिए पर्याप्त धन नहीं है

अक्षय कुमार विवाद

प्रियंका की जो शालीन और सभ्य छवि हम देखते हैं, उसमें समय के साथ काफी बदलाव आए हैं। उनकी शुरुआती फिल्मों के कुछ प्रचार तस्वीरों को देखने से पता चलता है कि उनमें से कुछ बेहद बोल्ड हैं। संयोग से, इनमें से ज्यादातर तस्वीरों में एक ही शख्स नजर आता है - अक्षय कुमार। आजकल अभिनेताओं को नकली भावनाएं दिखाने के लिए पैसे दिए जाते हैं और केमिस्ट्री भी उनमें से एक है। लेकिन कहते हैं ना, बिना आग के धुआं नहीं होता। उनकी फिल्मों "अंदाज़", "ऐतराज़", "मुझसे शादी करोगे" और "वक्त: ए रेस अगेंस्ट टाइम" के बाद अक्षय को उनकी पत्नी (खूबसूरत) ट्विंकल खन्ना से अल्टीमेटम मिला था कि वो प्रियंका के साथ किसी भी फिल्म में नजर न आएं, वरना! लगता है इस धमकी का असर

हुआ है क्योंकि प्रियंका और अक्षय अब बॉलीवुड के बड़े कार्यक्रमों में एक-दूसरे से बचते नजर आते हैं।

अक्षय कुमार: मेरे साथ तो ऐसा अक्सर होता रहता है।

हरमन के प्रति दीवानगी

प्रियंका और हरमन बावेजा का रिश्ता कथित तौर पर काफी लंबा चला और वे पांच साल तक साथ रहे। प्रियंका और हरमन ने दो फिल्मों में साथ काम किया, दोनों ही अपने-अपने तरीके से यादगार रहीं। 'लव स्टोरी 2050' और 'व्हाट्स योर राशि' दोनों ही बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं, लेकिन फिर भी लोगों की यादों में बसी रहेंगी - एक अपनी बेहद खराब परफॉर्मेंस के लिए और दूसरी रोल-प्ले की

बेहतरीन मिसाल के लिए। क्या कोई नौ अलग-अलग प्रियंका चोपड़ा देखना चाहेगा? आगे बढ़ने से पहले, ऐसा लगता है कि फिल्मों की असफलता का उनके अलग होने में कुछ हाथ रहा होगा। साफ तौर पर प्रियंका को हरमन के साथ फिल्मों में काम करने का बोझ महसूस हो रहा था। यह भी अफवाह थी कि शाहिद कपूर भी उनके अलग होने की वजह थे।

गरीबों का ऋतिक रोशन

आग से खेलना - किंग खान विवाद: जब आप बॉलीवुड की रानी बनने की होड़ में हों, तो स्वाभाविक है कि आप खुद किंग खान का ध्यान आकर्षित करना चाहेंगी। डॉन और डॉन 2 में साथ काम करने के बाद, किंग खान प्रियंका को बहुत पसंद करने

लगे और उन्हें खास सुविधाएं देने लगे। निर्माताओं के लिए सिफारिशें, हाउस पार्टियों के निमंत्रण और बड़े-बड़े ब्रांड एंडोर्समेंट किंग खान की बदौलत प्रियंका की झोली में गिरने लगे। स्वाभाविक रूप से, यह भावनात्मक बंधन गौरी खान को खटकने लगा, जो भले ही बॉलीवुड में प्रमुखता से न हों, लेकिन अपने पति के माध्यम से प्रभावशाली गलियारों में अपना दबदबा बनाए रखती हैं। गौरी के कहने पर शाहरुख खान को प्रियंका से संबंध तोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। गौरी ने प्रियंका को बड़े-बड़े निर्माताओं के बीच ब्लैकलिस्ट करवाने तक की कोशिश की, जिनमें करण जौहर जैसे दिग्गज भी शामिल थे, जो भली-भांति जानते थे कि उनका फायदा किसमें है।

गौरी: नन्हे सुअर, तुम जल्द ही नीचे गिरोगे।

सबसे बड़ा राज़ - शाहिद कपूर

शाहिद कपूर (अब मीरा राजपूत से शादीशुदा) प्रियंका के मशहूर प्रेम प्रसंगों की सूची में आखिरी नाम थे। अफवाह है कि जब आयकर विभाग ने प्रियंका के घर पर छापा मारा था, तो दरवाजा शाहिद कपूर ने ही खोला था। दोनों को कई फिल्मों में साथ देखा गया है, जहां उनकी केमिस्ट्री बेहद

आकर्षक रही है, और इसी वजह से शुरू में ये चर्चाएं शुरू हुईं। वे 'कमीने' और 'तेरी मेरी कहानी' फिल्मों में साथ नजर आए थे और टीवी शो 'कॉफी विद करण' और ब्रू कॉफी के एक विज्ञापन में भी साथ दिखे थे। उन्हें कई अवॉर्ड फंक्शन और पार्टियों में भी साथ देखा गया है। हालांकि, दोनों पक्षों ने इन सभी बातों का पुरजोर खंडन किया है और अब ये सब बीती बात हो चुकी है।

वाह, यह तो बहुत ही प्यारी तस्वीर है!
आज की प्रियंका

दुनिया की लाडली

आजकल प्रियंका चोपड़ा हर जगह नजर आती हैं। बॉलीवुड, हॉलीवुड, टीवी, फिल्में, आप जो भी नाम लें, वो हर जगह मौजूद हैं। भारत की सबसे बड़ी स्टार और हॉलीवुड में भी तेजी से उभरती हुई एक सफल स्टार, प्रियंका चोपड़ा भारतीय फिल्म सितारों, महिलाओं और खुद के लिए नए आयाम स्थापित कर रही हैं। उन्हें किसी एक श्रेणी में रखना आज असंभव है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी, कई क्षेत्रों में पुरस्कार विजेता, उन्हें शायद अभिनेत्री, गायिका, निर्माता, समाजसेवी, लेखिका और सौंदर्य प्रतियोगिता विजेता के रूप में जाना जाएगा। मुझे पूरा यकीन है कि मैंने कुछ और चीजें भी छोड़ दी हैं। वो अब भारत की सबसे अधिक फीस लेने वाली अभिनेत्रियों में से एक हैं और देश की सबसे लोकप्रिय और चर्चित हस्तियों में से एक हैं। कई प्रकाशनों ने उन्हें एशिया की (और मेरे विचार से पूरी दुनिया की) सबसे सेक्सी महिला बताया है। वो रेड कार्पेट पर अपने फैशनेबल और सजे-धजे अंदाज के लिए भी जानी जाती हैं। अभिनय जगत में मिले अनगिनत पुरस्कारों के अलावा, उन्हें मिले आधिकारिक पुरस्कारों की सूची चौंका देने वाली है। उन्होंने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता है और उन्हें पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया है, जो भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है। यह सब

उन्होंने महज 33 वर्ष की आयु में हासिल किया है। यह कोई रहस्य नहीं है कि मैं प्रियंका से बेहद प्यार करती हूँ और लंबे समय से करती आ रही हूँ। यह जानकर कि अब पूरी दुनिया इस प्रतिभा को पहचान रही है, मुझे बस यही कहना है, "इतनी देर क्यों लगी?" यह पुस्तक उन्हें समर्पित है। अपनी दीवानगी को काबू में रखते हुए, मैंने उनके बारे में प्रसारित होने वाली सभी खबरों के प्रति यथासंभव निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ रहने का प्रयास किया है। मैं उनकी निजता का सम्मान करती हूँ और मीडिया में प्रकाशित बातों से परे उनके निजी जीवन के पहलुओं में दखल नहीं दूंगी।

नोट: ऊपर दी गई तस्वीर उनकी आगामी (अब रिलीज हो चुकी) फिल्म 'जय गंगाजल' से है, जिसमें प्रियंका एक दमदार महिला पुलिस अधिकारी की भूमिका निभा रही हैं, जो ग्रामीण भारत के कुपोषण वाले इलाकों में सुधार लाने के लिए निकली हैं।
हॉलीवुड की कहानी

अगर आप पिछले एक साल से दुनिया से कटे हुए नहीं हैं, तो आपको पता होगा कि प्रियंका एक अमेरिकी टीवी शो 'क्वांटिको' में मुख्य भूमिका निभा रही हैं (और शानदार अभिनय कर रही हैं)। इस सीरीज को जोशुआ सैफरन ने बनाया है और इसका प्रीमियर एबीसी पर 27 सितंबर, 2015 को हुआ था। प्रियंका इस शो में एलेक्स पैरिश का किरदार निभा रही हैं और मुख्य नायिका हैं। इसके साथ ही वह किसी अमेरिकी नेटवर्क ड्रामा सीरीज में मुख्य भूमिका निभाने वाली पहली दक्षिण एशियाई (पुरुष या महिला) बन गईं। कहानी एफबीआई के रंगरूटों के एक समूह के इर्द-गिर्द घूमती है, जिनमें से प्रत्येक के अकादमी में शामिल होने के अलग-अलग कारण हैं। कहानी का संदर्भ यह है कि ग्रैंड सेंट्रल स्टेशन पर बम धमाका हुआ है, जो 9/11 हमलों के बाद अमेरिकी धरती पर हुआ सबसे विनाशकारी बम धमाका है। कहानी में यह बात सामने आती है कि एफबीआई के रंगरूटों में से एक इन हमलों के लिए जिम्मेदार है। हमले के बाद स्टेशन के

मलबे के बीच एलेक्स (प्रियंका) का शव मिलता है और वह इस मामले में मुख्य संदिग्ध है। अब एलेक्स को भाग निकलना होगा और अपना नाम साफ़ करने की कोशिश करनी होगी, साथ ही अपने अपहरणकर्ताओं और शिकारियों से भी बचना होगा, जो कि अमेरिकी कानून प्रवर्तन एजेंसियों की पूरी ताकत है। दिलचस्प है ना? प्रियंका को बंदूक पकड़े, बाधाओं को पार करते और ज़बरदस्त एक्शन करते देखना ही मुझे यह शो देखने के लिए काफ़ी था। हालाँकि इस शो की कहानी और प्रस्तुति 'होमलैंड' जितनी शानदार नहीं है, फिर भी इसमें कई बेहतरीन पल हैं। प्रियंका ने शानदार काम किया है और इस भूमिका के लिए मिल रही सभी तारीफों की वह पूरी तरह हकदार हैं। वह प्रतिभाशाली, समर्पित और सबसे बढ़कर, साहसी हैं! जाने-माने अखबार 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने उन्हें शो की "सबसे मज़बूत मानवीय संपत्ति" बताया है और उनके अभिनय को "तुरंत आकर्षक और प्रभावशाली" बताया है।

यहां तक कि द रॉक भी उसे कूल मानते हैं।

ऊपर दी गई तस्वीर में प्रियंका और उनके नए सह-कलाकार ड्वेन "द रॉक" जॉनसन हैं। यकीन मानिए! प्रियंका चोपड़ा, द रॉक के साथ काम कर रही हैं! यह अविश्वसनीय है। वे क्लासिक टीवी सीरीज़ बेवॉच के आगामी रीमेक में साथ नज़र आएंगे। मैं तो बस कल्पना ही कर सकती हूं कि प्रियंका लाल बेवॉच स्विमसूट में कितनी खूबसूरत लगेंगी। वाकई, हम एक शानदार दौर में जी रहे हैं। ऐसा दौर जहां आपका बचपन का क्रश अब किसी ऐसी चीज़ के रीमेक में काम करने जा रहा है जिसमें आपके बचपन के कई क्रश रहे होंगे। आह, बस इंतज़ार नहीं कर सकती।

आगामी परियोजनाएँ
एक अभिनेत्री और निर्माता के रूप में, अद्वितीय प्रियंका के कई प्रोजेक्ट इस समय निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। इस प्रतिभाशाली अभिनेत्री से 2016 में क्या उम्मीद की जा सकती है, इसकी एक संक्षिप्त सूची यहां दी गई है।

संजय लीला भंसाली की फिल्म 'गुस्ताखियां' में अभिनय, जो कवि साहिर लुधियानवी और अमृता प्रीतम के रिश्ते पर आधारित है। अमृता प्रीतम एक महान भारतीय कवयित्री-लेखिका थीं, जिनका निधन 1919 से 2005 के बीच हुआ। पहली प्रमुख महिला पंजाबी कवयित्री, अमृता प्रीतम के बारे में कहा जाता है कि उन्हें कवि साहिर लुधियानवी से एकतरफा प्रेम था।
एक्शन कॉमेडी फिल्म बेवॉच में अभिनय करते हुए, वह मुख्य किरदार (स्विमसूट में खलनायिका प्रियंका) निभाएंगी। फिल्म का निर्देशन सेठ गॉर्डन कर रहे हैं और इसमें ड्वेन जॉनसन, ज़ैक एफ़्रॉन और एलेक्जेंड्रा डैडारियो सह-कलाकार हैं। मधुर भंडारकर की राजनीतिक ड्रामा फिल्म मैडमजी में एक नर्तकी से राजनेता बनी महिला के किरदार में अभिनय और निर्माण दोनों कर रही हैं। उन्होंने अपनी प्रोडक्शन कंपनी "पर्पल पेबल्स पिक्चर्स" के तहत तीन क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में बनाई हैं। इनमें मराठी, पंजाबी और भोजपुरी भाषा की एक-एक फिल्म शामिल है।
प्रारंभिक जीवन

कुछ महिलाओं को देखकर ही पता चल जाता है कि वे बेहद आकर्षक होंगी।

प्रियंका चोपड़ा का जन्म 18 जुलाई, 1982 को बिहार के जमशेदपुर में हुआ था।
उनके माता-पिता अशोक और मधु चोपड़ा थे, दोनों ही भारतीय सेना में चिकित्सक

थे। एक आम सैन्य परिवार की सदस्य होने के नाते, प्रियंका भारत के कई शहरों में पली-बढ़ीं। दिल्ली, चंडीगढ़, अंबाला, लद्दाख, लखनऊ, बरेली और पुणे उनमें से कुछ प्रमुख शहर हैं। उनका मानना है कि लगातार एक जगह से दूसरी जगह जाने से ही उनमें अनुकूलनशीलता आई, जो आज भी उनके काम आती है। शरारती अंदाज़ में वह यह भी कहती हैं कि स्कूल में मनचाही शरारत करने की आज़ादी उन्हें इसी वजह से मिली, क्योंकि उन्हें पता था कि जल्द ही उन्हें किसी दूसरी जगह जाना होगा। कितनी शरारती!

प्रियंका के पिता पंजाबी हैं, जबकि उनकी मां झारखंड से हैं। उनके भाई सिद्धार्थ उनसे सात साल छोटे हैं। उनका परिवार पहले से ही बॉलीवुड में एक प्रतिष्ठित परिवार है, जिसमें उनकी चचेरी बहनें परिणीति चोपड़ा, मीरा चोपड़ा और मन्नारा भी शामिल हैं, जो इंडस्ट्री में अपनी पहचान बना रही हैं। उन्होंने लखनऊ के ला मार्टिनियर गर्ल्स स्कूल और बरेली के सेंट मारिया गोरेटी कॉलेज जैसे स्कूलों में पढ़ाई की है। कई अलग-अलग जगहों पर रहने के बाद, प्रियंका कहती हैं कि उन्हें लेह में बिताए समय की प्यारी यादें हैं, जहां उनके पिता की तैनाती उस समय हुई थी जब प्रियंका लगभग 8-9 साल की थीं। वह कहती हैं,

“मुझे लगता है कि मैं चौथी कक्षा में था जब मैं लेह में था। मेरे भाई का अभी-अभी जन्म हुआ था। मेरे पिताजी सेना में थे और उनकी तैनाती वहीं हुई थी। मैं एक साल तक लेह में रहा और उस जगह की मेरी यादें बेहद समृद्ध हैं... हम सब वहाँ सेना के बच्चे थे। हम घरों में नहीं रहते थे, हम घाटी में बने बंकरों में रहते थे और एक पहाड़ी की चोटी पर एक स्तूप था जहाँ से हमारी घाटी का नजारा दिखता था। हम स्तूप की चोटी तक दौड़ लगाते थे।”

प्रियंका बरेली को अपना गृहनगर मानती हैं। अंतरराष्ट्रीय सुपरस्टार का बरेली जैसे छोटे शहर को अपना गृहनगर मानना कितना प्यारा है! कहा जाता है कि उनके परिवार के साथ उनके मजबूत संबंध हैं।

आज प्रियंका एक बेहद आत्मनिर्भर महिला हैं, जो समय क्षेत्रों और भाषाओं की सीमाओं को सहजता से पार कर लेती हैं। उनकी आत्मनिर्भरता का निर्माण उनके

बचपन और युवावस्था के अनुभवों से हुआ है। सेना के बच्चे की संतान होना उनके लिए एक बड़ा लाभ था, लेकिन शायद इसके बाद जो हुआ, उसी ने उन्हें वास्तव में एक विश्व नागरिक बनाया।

13 साल की उम्र में प्रियंका पढ़ाई के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका चली गईं। वह अपनी मौसी के साथ रहती थीं और न्यूटन, मैसाचुसेट्स और सीडर रैपिड्स, आयोवा के स्कूलों में पढ़ीं। वह कुछ समय के लिए क्वींस, न्यूयॉर्क में भी रहीं। उनकी मौसी का परिवार भी उनकी तरह अक्सर जगह बदलता रहता था। अमेरिका में उनकी विभिन्न प्रतिभाओं को निखरने का मौका मिला, जहाँ उन्होंने थिएटर प्रस्तुतियों में अभिनय किया, पश्चिमी शास्त्रीय संगीत, गायन और कथक नृत्य का अध्ययन किया। उन दिनों, जैसा कि शायद आज भी कई भारतीय अनुभव करते होंगे, प्रियंका को अपने कुछ सहपाठियों द्वारा नस्लीय उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। उनके अपने शब्दों में,

“मैं बचपन में दुबली-पतली थी, मेरा आत्मविश्वास कम था, मैं एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार से आती थी, मेरे पैरों पर सफेद निशान थे... लेकिन मैं बेहद मेहनती थी। आज मेरे पैरों पर 12 ब्रांड बिकते हैं।”

अमेरिका में तीन साल की पढ़ाई के बाद प्रियंका भारत लौट आईं और बरेली के आर्मी पब्लिक स्कूल से अपनी हाई स्कूल की शिक्षा पूरी की। यहाँ उन्होंने स्थानीय "मे क्वीन" सौंदर्य प्रतियोगिता जीती। इसके बाद कई चाहने वालों ने उनका पीछा करना शुरू कर दिया, जिसके चलते उनके पिता ने उनकी सुरक्षा के लिए घर में लोहे की जाली लगवा दी। प्रिय पाठक, यह बात आपको शायद अजीब लगे, लेकिन मैं आपको विश्वास दिला दूं कि भारत में इस तरह की बातें आम हैं। शुक्र है, इससे कोई अप्रिय घटना नहीं हुई (कम से कम जिसकी हमें जानकारी है) जिससे प्रियंका पर कोई स्थायी प्रभाव पड़े। हालांकि, यह प्रसिद्धि प्रियंका के जीवन में आने वाली बड़ी चीजों की सिर्फ शुरुआत थी, जिनके बारे में हम जल्द ही पढ़ेंगे।
सौंदर्य रानी

दीया मिर्जा को आखिरी बार पुरस्कार कब मिला था?

मई क्वीन प्रतियोगिता में मिली शानदार प्रतिक्रिया के बाद, प्रियंका की मां ने उन्हें मिस इंडिया 2000 प्रतियोगिता में नामांकित किया। अब मुझे नहीं पता कि दुनिया भर के पाठकों का क्या मानना है, लेकिन भारत में सौंदर्य प्रतियोगिताएं अब बहुत महत्वपूर्ण हो गई हैं। प्रियंका, सुष्मिता, ऐश्वर्या और लारा दत्ता की उपलब्धियों के कारण आज सौंदर्य प्रतियोगिता जीतना प्रसिद्धि और सफलता की गारंटी माना जाता है। 2000 में भी, भारत विश्व मंच पर अपनी सुंदरियों की हालिया जीतों से उत्साहित था। हालांकि, प्रियंका ने शुरू से ही प्रतियोगिता जीतने की योजना नहीं बनाई थी। वास्तव में, वह कहती हैं कि यह केवल उनकी पढ़ाई से बचने का एक बहाना था। उनके अपने शब्दों में,

मैं 12 वीं बोर्ड की परीक्षा की तैयारी कर रही थी, तभी मेरी माँ ने मिस इंडिया प्रतियोगिता के लिए मेरी तस्वीरें भेजीं। मैंने ये तस्वीरें पहले

ऑस्ट्रेलिया में छात्रवृत्ति के लिए खिंचवाई थीं, जहाँ मैं इंजीनियरिंग करना चाहती थी। जब मुझे कॉल आया, तो मुझे समझ नहीं आया कि क्या जवाब दूं! मेरे पिताजी ने मुझसे कहा कि एक बार कोशिश करो। और मैंने की। पढ़ाई छोड़ने के लिए कुछ भी! मुझे नहीं लगा था कि मैं जीत जाऊंगी।
मैं बस थोड़ा आराम करने गई थी। मैं और मेरा परिवार इस बारे में मजाक करते थे। मैं मिलेनियम मिस इंडिया बनूंगी!

प्रियंका की स्वाभाविक सुंदरता और जीवंतता इस प्रतियोगिता में साफ झलकती थी, जब उन्होंने प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया और उसी वर्ष बाद में आयोजित होने वाली मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार प्राप्त किया।

मिस वर्ल्ड 2000 प्रतियोगिता 30 नवंबर, 2000 को लंदन, ब्रिटेन के मिलेनियम डोम में आयोजित की गई थी। यह आयोजन विशेष महत्व रखता था क्योंकि यह प्रतियोगिता का 50 वां संस्करण था और विजेता को मिलेनियम मिस वर्ल्ड का खिताब भी मिलता।

मदर टेरेसा, विश्व भूखमरी वगैरह वगैरह

ताज जीतने की प्रबल दावेदार प्रियंका ने आसानी से प्रतियोगिता जीत ली। उन्हें ताज उनकी हमवतन युक्ता मुखी ने सौंपा, जो 1999 की विजेता थीं। इसके साथ ही प्रियंका पिछले सात वर्षों में ताज जीतने वाली चौथी भारतीय बन गईं। लारा दत्ता और दीया मिर्जा के भी भारत को गौरवान्वित करने के साथ ही भारत ने प्रमुख सौंदर्य प्रतियोगिताओं में क्लीन स्वीप कर लिया। यहां तक कि सट्टेबाजी करने वालों को भी लग रहा था कि प्रियंका की जीत पक्की है। लोकप्रिय सट्टेबाजी पोर्टल लैडब्रोक्स पर उन्हें ताज जीतने के लिए 6 गुना प्रबल दावेदार माना जा रहा था।

प्रश्नोत्तर दौर में प्रसिद्ध अमेरिकी टीवी शो के होस्ट ने उनसे पूछा, "जीवित महिलाओं में सबसे सफल कौन हैं?" प्रियंका ने इसका उत्तर मदर टेरेसा का नाम लेकर दिया और कहा कि वे अपनी करुणा, प्रेम और कुष्ठ रोगियों की मुस्कुराते हुए सेवा करने के कारण सबसे सफल महिला हैं। हालांकि यह एक गलती मानी जा सकती है क्योंकि मदर टेरेसा को गुज़रे हुए कुछ साल हो चुके थे, फिर भी प्रियंका ने इसे अपने शांत आत्मविश्वास के साथ संभाला और अपनी प्यारी मुस्कान से दुनिया को मोहित कर लिया। पीछे मुड़कर देखें तो हमें एक युवा आदर्शवादी लड़की दिखाई देती है जिसकी आँखों में बड़े सपने थे। उस समय प्रियंका एक क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट बनने की ख्वाहिश रखती थीं, उन्हें नृत्य करना, संगीत सुनना और पढ़ना पसंद था और वे एड्स विरोधी और पोलियो विरोधी अभियानों से जुड़ी हुई थीं। प्रियंका ने प्रतियोगिता जीतने में अपनी "भारतीयता" को श्रेय दिया। उनके अपने शब्दों में,

“मेरे नैतिक मूल्य और सिद्धांत, जो मुझे भारतीय होने के नाते विरासत में मिले हैं, मुझमें गहराई से समाए हुए हैं। किसी और को इस तरह की परवरिश का अनुभव नहीं हो सकता। मुझे लगता है कि यही बात सबसे बड़ा फर्क पैदा करेगी।”

उनका यह भी मानना था कि अन्य लड़कियों को आँख बंद करके उनके नक्शेकदम पर नहीं चलना चाहिए और सौंदर्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से करियर बनाने के

बारे में सोचने से पहले एक करियर योजना बना लेनी चाहिए। उनके अपने शब्दों में,

“उन्हें हमारी पृष्ठभूमि के बारे में पता होना चाहिए। युवाओं को अपनी पढ़ाई छोड़कर अंधाधुंध अनुकरण नहीं करना चाहिए। जिसने भी ऐसा किया है (पढ़ाई छोड़ी है), उसे अपने फैसले पर पछतावा हो रहा है।”
ताज जीतने पर उनके परिवार की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उनकी मां, पिता और दादी बेहद खुश थे। उनके परिवार के कुछ कथन इस प्रकार हैं:

“मैंने पूरी रात इस भव्य आयोजन को देखा और जब मिमी को विजेता घोषित किया गया तो मुझे बेहद खुशी हुई। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि जो बच्ची कल तक हमारी गोद में खेल रही थी, उसने यह उपलब्धि हासिल कर ली है।”
- श्रीमती मधु ज्योत्सना अखौरी - प्रियंका की नानी
जब प्रियंका के नाम की घोषणा हुई तो यह एक अद्भुत एहसास था। यह हमारे लिए बहुत गर्व और खुशी की बात है। प्रियंका के मिस वर्ल्ड बनने के तुरंत बाद, उनके पिता और मेरे बड़े भाई, लेफ्टिनेंट कर्नल (रिटायर्ड) अशोक चोपड़ा ने हमें लंदन से फोन करके खुशखबरी दी। प्रियंका की मां, श्रीमती मधु चोपड़ा भी वहां मौजूद थीं। वह अक्सर छुट्टियां हमारे साथ अंबाला में बिताती थीं और उन्हें मेरी मां के हाथ के बने अचार बहुत पसंद थे। प्रियंका सबसे कम उम्र की प्रतियोगी थीं और उन पर दबाव था। मैंने उनसे बात की और उन्हें आश्वस्त किया कि हमें उन पर पूरा भरोसा है।
- श्री पवन चोपड़ा - प्रियंका के चाचा

आइए प्रियंका से ही सुनते हैं कि उन्होंने 2000 में मिस वर्ल्ड का खिताब जीतने के बाद क्या यादें साझा कीं।

“जब मैंने मिस वर्ल्ड का खिताब जीता, तब मैं 18 साल की भी नहीं थी, और मुझे बस इतना याद है कि मैंने इसे एक आम दिन की तरह ही समझा था। मुझे ऐसा नहीं लगा कि यह मिलेनियम ईयर की मिस वर्ल्ड थी, सदी का सबसे बड़ा बदलाव था। कम से कम दो साल तक मुझे इसकी अहमियत समझ नहीं आई। जैसे, उससे कुछ महीने पहले, मैं स्कूल यूनिफॉर्म में 12 वीं कक्षा में थी और फिर मैंने सबसे बड़े

डिजाइनरों के साथ मॉडलिंग की, दुनिया भर की यात्रा की, और विश्व प्रेस के सामने जिम्बाब्वे की अर्थव्यवस्था के बारे में बात की, और मैं सोच रही थी, मैं क्या बोल रही हूँ?”
- प्रियंका चोपड़ा

यह प्रियंका के शानदार करियर की सिर्फ शुरुआत है, और हम आशा करते हैं कि यह आने वाले कई दशकों तक जारी रहेगा। आगे हम मिस वर्ल्ड का ताज जीतने के बाद प्रियंका की अन्य क्षेत्रों में उपलब्धियों के बारे में जानेंगे।

फिल्म जगत में प्रवेश
चलिए इस खंड की शुरुआत एक कहानी से करते हैं। एक लड़की, जो इस समय दुनिया की सबसे सफल हस्तियों में से एक है, अपनी एक दोस्त के साथ एक स्थानीय समुद्र तट पर टहल रही है। वह समुद्र तट के ठीक बगल में लगे विशाल होर्डिंग्स को देखती है और अपनी दोस्त से कहती है कि एक दिन वह भी इन सभी होर्डिंग्स पर अपनी तस्वीर देखना चाहती है। वह यह बात कहने के अगले पांच वर्षों के भीतर ही अपने इस सपने को साकार कर लेती है। अगर यह आपको प्रबल महत्वाकांक्षा नहीं दिखाता, तो मुझे नहीं पता कि और क्या दिखाएगा। कहानी की यह लड़की कोई और नहीं बल्कि प्रियंका चोपड़ा हैं। खुद को उनकी जगह रखकर देखिए। आपने अभी-अभी दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला का खिताब जीता है और आपकी उम्र मुश्किल से 18 साल है। फिर भी आप एक बिल्कुल नए क्षेत्र में सुपरस्टारडम हासिल करना चाहती हैं। इसके लिए आपको अथक परिश्रम करना होगा, लगातार मुस्कुराते रहना होगा, मन न होने पर भी बाहर जाना होगा, बेतुके उत्पादों और कार्यक्रमों का प्रचार करना होगा, और फिर भी आप इसके लिए तैयार हो जाती हैं और वास्तव में आप इसमें कमाल कर देती हैं। प्रियंका चोपड़ा कुछ इसी तरह की शख्सियत हैं। शब्द के सही अर्थों में एक विजेता। विश्व सौंदर्य रानी से लेकर भारतीय फिल्म उद्योग की रानी बनने तक, उन्होंने यह सफर बड़ी सहजता से तय किया है।

आज विश्व प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेत्री होने के बावजूद, प्रियंका ने अपने करियर की शुरुआत तमिल फिल्म उद्योग में 2002 में आई फिल्म 'तमिलन' से की थी। यह फिल्म विजय के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसमें प्रियंका उनकी प्रेमिका की भूमिका निभाती हैं। एक समीक्षक के शब्दों में...

“फिल्म ‘तमिलन’ में प्यार की कोई खास जगह नहीं है, इसलिए नवोदित अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा के पास करने के लिए बहुत कम काम है। लेकिन दुनिया की इस खूबसूरत अभिनेत्री को कुछ गानों में पहने गए अजीबोगरीब विग्स के बारे में कुछ करना चाहिए था।”

मैं तुम्हें चुनौती देती हूँ कि मेरे बालों की नकल करके दिखाओ, कोशिश करके देखो!

मैं इसे ज़्यादा से ज़्यादा तटस्थ समीक्षा ही कहूँगा। प्रियंका को निर्देशक जोड़ी अब्बास-मस्तान की रोमांटिक थ्रिलर फ़िल्म 'हमराज़' से 2002 में डेब्यू करना था। हालाँकि, कई कारणों से यह फ़िल्म नहीं बन पाई और अमीषा पटेल ने वह भूमिका निभाई जो प्रियंका को निभानी थी। इसके बाद उन्होंने 'हीरो: लव स्टोरी ऑफ़ अ स्पाई' फ़िल्म से बॉलीवुड में डेब्यू किया, जिसमें उन्होंने प्रीति ज़िंटा के साथ दूसरी मुख्य भूमिका निभाई। यह फ़िल्म 2003 की तीसरी सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फ़िल्म थी, लेकिन समीक्षकों से इसे मिली-जुली समीक्षाएँ मिलीं। हालाँकि, प्रियंका को इस फ़िल्म के लिए शानदार समीक्षाएँ मिलीं, एक समीक्षक ने कहा कि "बेहद खूबसूरत चोपड़ा ने एक आधुनिक शहरी लड़की के रूप में दमदार डेब्यू किया

है।" उसी साल, वह राज कंवर की फ़िल्म 'अंदाज़' में नज़र आईं, जिसमें अक्षय कुमार और लारा दत्ता भी थे। मुझे याद है कि यह फ़िल्म एक बेहद हॉट आइटम नंबर के लिए जानी जाती है, जिसमें दोनों अभिनेत्रियाँ बेबाक अंदाज़ में नज़र आती हैं। इससे पहले कि आप कुछ और कल्पना करने लगें, मैं आपको बता दूं कि यह कोई 'वाइल्ड थिंग्स' नहीं है और सभी भारतीय फ़िल्में परिवार के साथ देखने के लिए बनाई जाती हैं। प्रियंका ने एक चुलबुली लड़की का किरदार निभाया, जिसे अक्षय कुमार के किरदार से प्यार हो जाता है (ज़ाहिर है!)। उन्हें (लारा दत्ता के साथ) उस साल सर्वश्रेष्ठ डेब्यू के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया और उन्होंने यह पुरस्कार जीता भी। यह देखते हुए कि इस पुरस्कार को प्रेम अगन के लिए फरदीन खान जैसे दिग्गज भी प्राप्त कर चुके हैं, इसे बहुत सम्मान की नज़र से नहीं देखा जा सकता। लेकिन पुरस्कार तो पुरस्कार होता है और इस फिल्म ने प्रियंका के करियर को गति दी, जो हर लिहाज़ से बॉलीवुड में तेज़ी से आगे बढ़ रहा था।

अपनी जगह बनाना

2004 में प्रियंका की पहली तीन फिल्में दुर्भाग्यवश बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं। बॉलीवुड की दुनिया में, यही एकमात्र पैमाना है जो अंततः मायने रखता है। चाहे आप स्टार किड हों या बिल्कुल नए कलाकार, आपकी कीमत उतनी ही होती है जितना आप कमा सकते हैं। ये तीन फिल्में थीं प्लान, असंभव और किस्मत। एक मजेदार बात यह है कि प्लान फिल्म में प्रियंका का आइटम नंबर 'प्यार आया' जरूर देखें। यह देखने लायक है। ये सभी फिल्में गैंगस्टर या थ्रिलर थीं, जिनमें प्रियंका को ग्लैमरस प्रेमिका की भूमिका तक ही सीमित रखा गया था। आलोचकों और समीक्षकों ने बताया कि उन्हें मुख्य रूप से ग्लैमर के लिए ही कास्ट किया गया था और फिल्मों में उन्हें अभिनय की कोई खास चुनौती नहीं मिली। हालांकि, बदलाव यह आया कि अब प्रियंका को मुख्य महिला भूमिकाओं में लिया जाने लगा क्योंकि फिल्म जगत को एहसास हो गया था कि उनमें फिल्म की मुख्य महिला भूमिका को अकेले निभाने की स्टार क्वालिटी है। उसी साल बाद में, प्रियंका ने सलमान खान और अक्षय कुमार के साथ फिल्म 'मुझसे शादी करोगे' में अभिनय किया, जो एक रोमांटिक कॉमेडी थी और व्यावसायिक रूप से सफल

रही। इस फिल्म ने उन्हें एक सक्षम एकल अभिनेत्री के रूप में स्थापित किया, जो उद्योग जगत के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों के साथ अपनी जगह बना सकती थीं। सफलता का पहला स्वाद

हालांकि, 2004 में प्रियंका की सबसे महत्वपूर्ण रिलीज़ अब्बास-मुस्तन की थ्रिलर फिल्म ऐतराज़ थी, जिसमें उन्होंने अक्षय कुमार और करीना कपूर के साथ अभिनय किया था, जो उस समय के स्थापित और बेहद सफल सितारे थे। रिलीज़ के समय यह फिल्म एक क्रांतिकारी फिल्म साबित हुई। प्रियंका ने फिल्म में सोनिया का किरदार निभाया है, जो अपनी स्थिति की शक्ति और प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए अक्षय कुमार के किरदार पर यौन उत्पीड़न का झूठा आरोप लगाती है। प्रियंका ने फिल्म में अपने किरदार को "बेहद नकारात्मक" बताया। उन्होंने कहा कि उनका
“उसकी सोच यह है कि उसे अपने लक्ष्य हर कीमत पर हासिल करने हैं। वह एक बात जानती है: उसकी इच्छाओं और उसके अस्तित्व के बीच कुछ भी नहीं आ सकता।” यह फिल्म प्रियंका चोपड़ा की रूढ़िवादी परवरिश से बिल्कुल अलग थी, जिसके कारण फिल्म रिलीज से पहले वह बेहद घबरा गई थीं। हालांकि, उन्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी। ऐतराज़ व्यावसायिक और समीक्षकों दोनों ही दृष्टि से सफल रही और प्रियंका ने सोनिया के दमदार किरदार से सबका दिल जीत लिया। उन्हें भारतीय सिनेमा में मोहक महिला के किरदार को फिर से जीवंत करने का श्रेय दिया गया और शायद यही वह फिल्म थी जिसने उनके करियर की दिशा को काफी हद तक बदल दिया। बीबीसी के एक समीक्षक ने कहा, “ऐतराज़ प्रियंका चोपड़ा की फिल्म है। एक शातिर, लालची और षड्यंत्रकारी मोहक महिला के रूप में, वह अपनी चुंबकीय उपस्थिति से हर दृश्य में जान डाल देती हैं।”

अपने अभिनय के लिए प्रियंका ने फिल्मफेयर फिल्मफेयर पुरस्कार में नकारात्मक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का पुरस्कार जीता और यह पुरस्कार जीतने वाली वह दूसरी और अंतिम अभिनेत्री बनीं। बाद में यह पुरस्कार बंद कर दिया गया। हालांकि, यह तो उनके लिए आने वाले कुछ वर्षों में आने वाले उतार-चढ़ाव भरे सफर की सिर्फ शुरुआत थी, जिसमें ऊंचाइयों के साथ-साथ कई उतार-चढ़ाव भी शामिल थे।

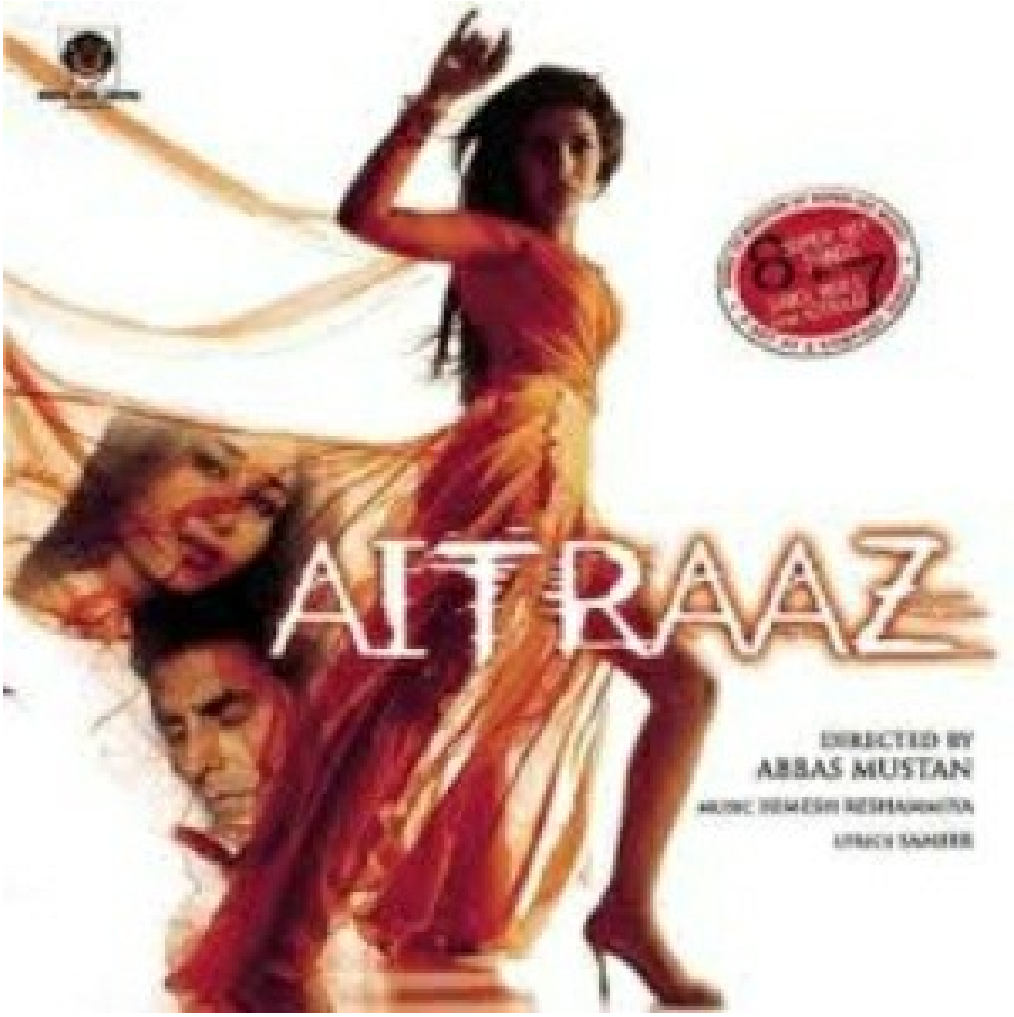

मुझे इतनी गर्मी लग रही है कि मेरी स्कर्ट में आग लग गई है!

रोलरकोस्टर पर ऊपर और नीचे

फिल्म इंडस्ट्री में अपने तीसरे साल में ही प्रियंका बेहद व्यस्त थीं। उन्होंने 2005 में छह फिल्मों में काम किया। उस साल की उनकी पहली फिल्में
- ब्लैकमेल और करम - बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं और प्रियंका को कोई खास सराहना भी नहीं मिली। हालांकि, करम के लिए उन्हें जो सराहना मिली, उसका जिक्र करना जरूरी है। एक ऑनलाइन पोर्टल पर समीक्षा लिखते हुए सुभाष के. झा ने कहा कि प्रियंका ने "अपने सधे हुए अभिनय से एक ऐसे किरदार को जीवंत कर दिया है जिसकी कोमलता और सुंदरता, उसके लिए बनाए गए आंतरिक और बाहरी दोनों

ही पहलुओं से निखरती हैं।" अब मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि सुंदरता और कोमलता आंतरिक और बाहरी दुनिया से कैसे निखरती हैं, लेकिन लगता है कि समीक्षक भी प्रियंका के उतने ही बड़े प्रशंसक हैं जितने हम हैं। उसी साल उनकी अगली फिल्म का नाम था वक्त: समय के साथ दौड़। (नोट: इस शीर्षक का शाब्दिक अनुवाद है समय: समय के साथ दौड़)। इस फिल्म ने होली के दौरान शर्मनाक और अक्सर गैरकानूनी माने जाने वाले व्यवहार को और भी वैधता प्रदान की। "डू मी अ फेवर, लेट्स प्ले होली" गाने से ऐसा लगता है मानो जवान लड़कियों को कामुक लड़कों और पुरुषों द्वारा अपने चेहरे और शरीर पर रंग लगाने की छूट दी गई हो, लेकिन ऐसा नहीं है। प्रियंका, अक्षय कुमार के साथ होली खेलती हैं और इस सब की बेशर्मी पर खुशी से चीखती हैं। सच कहें तो, फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया, जिसमें सदाबहार (और दिखने में गंजे) सुपरस्टार अमिताभ बच्चन के दमदार अभिनय का भी योगदान था। होली के गाने की शूटिंग के दौरान एक अजीब घटना घटी, जब प्रियंका भीगी हुई हालत में (शरारती बच्चों, यह गंभीर मामला है) अपने मेकअप वैन की ओर लौट रही थीं, तभी उनका पैर एक बिजली के तार पर पड़ गया और उन्हें करंट लग गया। अरे बाप रे! फिल्म स्टार होना वाकई खतरों से खाली नहीं है, है ना? शुक्र है, चोट गंभीर नहीं थी और वह जल्दी ही ठीक हो गईं।

हां, हम होली ऐसे ही खेलते हैं।

उस साल उनकी अगली कुछ फिल्में मिली-जुली रहीं। उन्होंने अर्जुन रामपाल के साथ यकीन (जिसका अर्थ है विश्वास) नामक फिल्म में अभिनय किया। प्रियंका को एक भरोसेमंद स्टार और उभरती हुई सुपरस्टार के रूप में पहचान मिली। जाने- माने उद्योग विश्लेषक (आलोचक?) तरण आदर्श ने कहा कि प्रियंका "एक बार फिर प्रशंसा बटोरेंगी... ये अभिनेत्री तेजी से बदलते दौर में बेहतरीन प्रतिभाओं में से एक बनकर उभर रही हैं।" इसके बाद उन्होंने बॉबी देओल के साथ बरसात फिल्म में काम किया, जिसमें मुझे यकीन है कि बॉबी एक ऐसे परेशान नौजवान का किरदार निभाते हैं जो अपने पहले प्यार को खो देता है और कठोर, निराशावादी बन जाता है, लेकिन फिर एक खूबसूरत युवती उसका दिल पिघला देती है जो अपने सरल आकर्षण से उसका दिल जीत लेती है और उसे याद दिलाती है कि जीवन वास्तव में सुंदर है और प्यार आपको तब भी मिल सकता है जब आप उसे न खोजें। हाँ, यह बॉबी के साथ एक तरह का दोहराव वाला विषय है। आजकल ऐसा लगता है कि पारिवारिक मुक्केबाजी के मुकाबले चल रहे हैं, लेकिन यह एक अलग कहानी

है। वर्ष 2005 की उनकी आखिरी फिल्म ब्लफमास्टर थी, जो काफी मनोरंजक थी। फिल्म की कहानी दिलचस्प थी और प्रियंका ने अपने गानों से इसे यादगार बना दिया। "से ना", "ब्लफमास्टर" और "राइट हियर, राइट नाउ"। अगर आपने अभी तक "राइट हियर, राइट नाउ" नहीं देखा है, तो मेरी एक गुजारिश है कि इसे अभी देखें। माफ कीजिएगा। लेकिन सच में, उस गाने में प्रियंका अपनी हॉटनेस के चरम पर हैं (खासकर जब वो कहती हैं "बट आई एम अ गुड गर्ल"। वाह!)। भले ही फिल्म में अभिनय की कोई बड़ी चुनौती नहीं थी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन करने से प्रियंका की लोकप्रियता और बॉलीवुड में उनकी जगह बनाने में मदद मिली।

लेकिन वो अच्छी लड़की है!

डुबकी

अगर आप महाकाव्यों और पौराणिक कथाओं से अच्छी तरह वाकिफ हैं, तो आप जानते होंगे कि किसी भी बड़ी सफलता के पीछे एक बड़ी असफलता का होना जरूरी होता है। यही असफलता नायक की कहानी का मोड़ बन जाती है, जब वह खुद को संभालता है और अपने रास्ते में आने वाली हर बाधा का पूरी ताकत से सामना करता है और अंत में विजयी होता है। खैर, हममें से ज्यादातर लोगों की जिंदगी इससे बिलकुल अलग होती है। हम फिल्मी सितारे हैं या करोड़पति खिलाड़ी, और हम अपनी जिंदगी में जोश भरने के लिए मशहूर हस्तियों की तरफ देखते हैं। बॉलीवुड के इतिहास और घटनाओं से अच्छी तरह वाकिफ प्रियंका चोपड़ा एक जुझारू शख्सियत का जीता-जागता उदाहरण हैं। 2005 का साल उनके लिए उतार-चढ़ाव भरा रहा, लेकिन अगले कुछ साल उनके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण साबित हुए। सबकी निगाहें उन पर टिकी थीं, क्योंकि अब उन्हें लगातार भरोसेमंद रहने वाली अभिनेत्री से सत्ता की रानी बनने की ओर कदम बढ़ाना था।
2006

2006 में प्रियंका की पहली फिल्म 'कृष' थी, जिसमें सारा ध्यान ऋतिक रोशन पर केंद्रित था, जो उस समय इंडस्ट्री के सबसे बड़े पुरुष सितारों में से एक थे। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि उनके पिता फिल्म के निर्माता और निर्देशक थे, जबकि उनके चाचा ने संगीत दिया था। अगर मुझे ठीक से याद है तो प्रियंका ने बेहद छोटी स्कर्ट पहनी थी, जो मुझे आज भी ऋतिक रोशन द्वारा भारतीय सुपरहीरो कृष के अवतार में पहने गए लंबे वस्त्रों से कहीं ज्यादा पसंद है।

बस यूं ही उल्टा लटका हुआ

प्रियंका एक अवसरवादी पत्रकार की भूमिका निभाती हैं जो हमारे हीरो कृष को अपने जाल में फंसाने की कोशिश करती है। कृष को एक एलियन का आशीर्वाद मिला है जिससे उसे सुपर पावर्स मिली हैं, लेकिन वह अभी भी पूरी तरह से अलौकिक है। हालांकि, उसे यह नहीं पता कि यही शांत स्वभाव का युवक वह सुपरहीरो है जिस पर वह चुपके से मोहित है। नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह कहानी मेरे जीवन में पहले देखी गई किसी भी कहानी से मिलती-जुलती है। हालांकि, कृष मास्क पहनकर भारतीय फिल्म उद्योग की इज्जत बचाता है और सबको यह महत्वपूर्ण सबक सिखाता है कि कानूनी झंझटों से बचने के लिए, आपको कहानियों को थोड़ा-बहुत बदलना पड़ता है। एक और बात: एक्स्ट्रा रोमांच के लिए 'कोई मिल गया' देखें। मुझे नहीं लगता कि 'आप की खातिर' ऐसी फिल्म है जिसे इसके निर्देशक को भी अब याद है, तो चलिए इस पर बात करना छोड़ देते हैं। प्रियंका की साल की आखिरी रिलीज अमिताभ बच्चन की क्लासिक फिल्म 'डॉन' का रीमेक थी, जिसे प्रतिभाशाली निर्देशक फरहान अख्तर ने निर्देशित किया था। एक और बात: अगर आपने मूल फिल्म नहीं देखी है, तो एक बार जरूर देखें। 1970 के दशक में बनी यह जासूसी/गैंगस्टर थ्रिलर फिल्म आज भी काफी अच्छी लगती है, जो कुछ पुरानी

बॉन्ड फिल्मों के बारे में नहीं कहा जा सकता। प्रियंका ने रोमा का किरदार निभाया है, जो अपने छोटे भाई की मौत का बदला लेने के लिए गैंगस्टर बन जाती है। उसका भाई एक गैंगवार का शिकार हो जाता है। फिल्म में उसका मकसद फिल्म के मुख्य किरदार, डॉन, को खत्म करना है, जो अंडरवर्ल्ड का सरगना है और जिसे 11 देशों की पुलिस ढूंढ रही है। प्रियंका का किरदार मूल फिल्म में ज़ीनत अमान द्वारा निभाए गए किरदार का रूपांतरण है। उन्होंने फिल्म में अपने किरदार के साथ पूरा न्याय किया है और उससे भी बढ़कर, वो बेहद खूबसूरत और दमदार एक्शन करती नज़र आती हैं। फिल्म में एक्शन के लिए प्रियंका ने विशेष मार्शल आर्ट्स की ट्रेनिंग ली थी और कहा जाता है कि उन्होंने फिल्म में कई स्टंट खुद किए थे। उनके अभिनय की आलोचकों ने खूब तारीफ की और उनकी बहुमुखी प्रतिभा की सराहना की कि वो अभिनय करने के साथ-साथ खूबसूरत भी दिखती हैं और फिल्म की विशेष ज़रूरतों के लिए खुद को प्रशिक्षित करने का अतिरिक्त प्रयास भी करती हैं।

ऐसे धमाल मचा रहे हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

2007

2006 में व्यस्त शेड्यूल के बाद, प्रियंका ने 2007 में केवल दो फिल्मों में मुख्य भूमिका निभाई। पहली फिल्म थी 'सलाम-ए-इश्क', जिसे देखने मैं सिनेमाघर गया था। मैंने पढ़ा था कि यह फिल्म बेहद मजेदार और शानदार 'लव एक्चुअली' पर आधारित है और बॉलीवुड में अब तक की सबसे दमदार स्टार कास्ट में से एक है। निर्देशक निखिल आडवाणी ने इससे पहले 'कल हो ना हो' का निर्देशन किया था, जो भले ही थोड़ी घिसी-पिटी थी, लेकिन स्टार पावर के दम पर कुछ बेहतरीन ऑन-स्क्रीन सीन थे। हालांकि, भारतीय फिल्म निर्देशकों की एक अजीब आदत है कि वे अपने दर्शकों को बिल्कुल बेवकूफ समझते हैं (गानों की दो अंकों की संख्या का तो जिक्र भी नहीं)। वे फिल्म का आधे से ज्यादा समय किरदारों को स्थापित करने में लगा देते हैं और आखिरी कुछ मिनट एक्शन के धमाके में खर्च कर देते हैं। इस रणनीति का नतीजा यह होता है कि (क) फिल्म असहनीय रूप से लंबी हो जाती है और (ख) दर्शक घटनाओं की धीमी गति से निश्चित रूप से परेशान हो जाते हैं। जैसा कि आप समझ ही गए होंगे, फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हो गई। प्रियंका ने फिल्म में मशहूर पुरानी अभिनेत्रियों की नकल करके अपनी हास्य प्रतिभा की झलक दिखाई। उनकी अगली फिल्म 'बिग ब्रदर', जिसमें उन्होंने सनी देओल के साथ काम किया था, भी बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रही, जिससे उनके लिए यह साल निराशाजनक साबित हुआ। 2008

2008 में हाल के दौर की सबसे बेहतरीन फिल्मों में से एक (मज़ाकिया अंदाज़ में) रिलीज़ हुई। लव स्टोरी 2050 शायद बॉलीवुड की पहली गंभीर साइंस फिक्शन रोमांस फिल्म थी। कहानी एक ऐसे आदमी की है जो किसी मशहूर आदमी जैसा दिखता है और उसके माता-पिता उसे मशहूर बनाने की कोशिश करते हैं। नहीं, रुकिए, यह तो फिल्म के मुख्य अभिनेता हरमन बावेजा की कहानी है, जिनके पिता हैरी बावेजा ने फिल्म का निर्देशन किया और माता पम्मी बावेजा ने इसे प्रोड्यूस किया। हरमन को दुर्भाग्य से ग्रीक देवता जैसी खूबसूरती मिली

है। मैं दुर्भाग्य से इसलिए कह रहा हूं क्योंकि वह ऋतिक रोशन के छोटे रूप लगते हैं। हरमन के खिलाफ कुछ नहीं, वह किसी आम स्टार किड से कम नहीं हैं (भले ही तुषार कपूर जैसे अभिनेता औसत को काफी नीचे गिरा देते हैं)। और भी दुर्भाग्य से, हरमन ऋतिक से अपनी समानता को और भी उभारने की पूरी कोशिश करते हैं, चाहे वह डांस हो, एक्टिंग हो या फिर फिटिंग वाले कपड़े। फिल्म की कहानी दो प्रेमियों के इर्द-गिर्द घूमती है, जो भाग्य के उतार-चढ़ाव के कारण अलग हो जाते हैं, लेकिन एक अलग समय-पथ में फिर से मिलते हैं, जहाँ कई बाधाओं को पार करने के बाद उनका प्यार पूरा हो पाता है। हाँ, मैंने इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की कोशिश की, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद यह फिल्म हिट नहीं हुई। उन्होंने प्रियंका के हरमन को डेट करने का दावा किया, उन्होंने कथित तौर पर अत्याधुनिक स्पेशल इफेक्ट्स पर खर्च किए गए करोड़ों रुपये पर ज़ोर दिया, उन्होंने प्रियंका को एक एनिमे गर्ल का वास्तविक जीवन संस्करण बनाने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। फिल्म वाकई इतनी खराब थी। कहानी करण और सना के इर्द-गिर्द घूमती है, जो शादी करने वाले हैं। तभी एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में सना की मौत हो जाती है। करण को पता चलता है कि उसके एक परिचित ने टाइम मशीन का आविष्कार किया है। अब, दुख से व्याकुल करण से आप उम्मीद करेंगे कि वह तुरंत मशीन का इस्तेमाल करे और सना को निश्चित मृत्यु से बचाने के लिए समय में वापस जाए। है ना? बस फर्क इतना है कि करण और डॉ. खन्ना 50 साल आगे जाने का फैसला करते हैं क्योंकि सना ने कभी ऐसा करने की इच्छा जताई थी। ज़रा इस बात पर गौर कीजिए। जी हां, फिल्म कुछ इसी तरह की है। आपके लिए कुछ और मजेदार बातें।

फिल्म को IMDB पर फिलहाल 2.6 की रेटिंग मिली है और लगभग 2000 लोगों ने इसे रेट किया है।
इस फिल्म की वजह से फिल्म चेन एडलैब्स को 60 मिलियन रुपये का नुकसान हुआ।

भविष्य में सबके बाल अजीबोगरीब होंगे। प्रियंका ने अपने 2050 वाले अवतार में लाल बाल और अजीबोगरीब पाउट बनाए हैं और उनके हाव-भाव को काफी हद तक अश्लील कहा जा सकता है। आह! लगता है हममें से सबसे अच्छे लोग भी ऐसी चीजें कर बैठते हैं जिन्हें बाद में पछताते हुए कहते हैं, "ये क्या सोच रहे थे?" प्रियंका के लिए तो ये बिल्कुल वैसा ही था। फिर भी वो इसमें बेहद खूबसूरत लग रही थीं, तो शायद ये बात तो अभी भी हमारे पास है।
हालांकि, प्रियंका के लिए यह साल कुछ खास अच्छा नहीं रहा, क्योंकि उनकी अगली तीन फिल्में - चमकु गोड तुस्सी ग्रेट हो और द्रोणा भी बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हो गईं। प्रियंका को अपने अभिनय के लिए बहुत कम सराहना मिली, क्योंकि फिल्मों की भारी असफलता के कारण उनका अभिनय फीका पड़ गया। इस तरह लगभग 20 महीनों के अंतराल में प्रियंका की लगातार छह फिल्में

फ्लॉप हो गईं। आलोचकों के लिए उन्हें नकारने के लिए यह काफी था। उन्होंने बड़े नायकों के साथ काम किया, कॉमेडी, एक्शन और यहां तक कि साइंस फिक्शन फिल्मों में भी काम किया, फिर भी उनकी फिल्में कोई खास छाप नहीं छोड़ पाईं। क्या अब वह फिल्म इंडस्ट्री के सबसे निचले पायदान पर पहुँचने वाली थीं?

स्वर्ण युग का आरंभ होता है

जैसा कि आप समझ ही गए होंगे, प्रियंका अपने करियर के शायद सबसे बुरे दौर से गुज़र रही थीं। इस पर उनकी प्रतिक्रिया शायद यह रही होगी, "चलो, अब तक तो मेरा करियर ठीक-ठाक चल रहा है। कुछ और बेवकूफी भरी फिल्में करके इसका फायदा उठा लेती हूँ और फिर बस।" क्या आपको लगता है कि प्रियंका ऐसा करतीं? नहीं, बिल्कुल नहीं। वो तो पक्की विजेता हैं और उन्होंने अपनी असफलताओं को एक चैंपियन की तरह स्वीकार किया, उनसे और भी मजबूत होकर उभरीं।

अब, यह कहना कि बॉलीवुड एक पुरुष प्रधान फिल्म उद्योग है, एक बहुत ही हल्की बात होगी। एक दशक पहले तक भी, लगभग सभी निर्देशक, निर्माता और शायद संगीत निर्देशक भी पुरुष ही थे। पर्दे पर महिलाओं को उन कल्पनाओं के रूप में दिखाया जाता था जो ज्यादातर दबे हुए भारतीयों के मन में होती थीं। कभी चुलबुली, कभी छेड़ने वाली, लेकिन हमेशा फिल्म में मुख्य पुरुष कलाकार के अधीन। फिल्मों की सफलता मुख्य रूप से मुख्य पुरुष कलाकार की गुणवत्ता पर निर्भर करती थी, जबकि नायिका (बॉलीवुड की भाषा में) केवल सुंदर दिखने और नायक द्वारा बचाए जाने और उससे शादी करने तक ही सीमित रहती थी। बॉलीवुड एक कुख्यात अंदरूनी गिरोह भी है, जहां ज्यादातर स्थापित फिल्मी सितारों को उद्योग में अपने प्रभावशाली संपर्कों के माध्यम से सफलता मिलती है। एक बिल्कुल बाहरी महिला, जो हताश थी, ने इन रूढ़ियों को बदलने का बीड़ा उठाया और संभवतः उद्योग में एक क्रांति ला दी, जो आज लैंगिक समानता और प्रतिभा के मिश्रण, दोनों ही मामलों में कहीं अधिक लोकतांत्रिक है। यहां प्रतिभाओं को योग्यता के आधार पर चयन करने के बजाय स्वदेशी प्रतिभाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

मधुर भंडारकर कोई साधारण निर्देशक नहीं हैं। स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले इस निर्देशक ने वीडियो टेप की दुकान पर काम करते हुए कहानी कहने की कला को स्वयं ही सीखा। ट्रैफिक सिग्नल पर च्युइंग गम बेचना, वीडियो कैसेट पहुँचाना और लेना, और छोटे-मोटे फिल्म निर्देशकों के सहायक के रूप में 15 डॉलर मासिक वेतन पर काम करना, उनके कुछ अनूठे काम थे। मुंबई जैसे विशाल और जीवंत शहर में ऐसी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में रहने से

स्वाभाविक रूप से किसी व्यक्ति को कहने, लिखने या फिल्म बनाने के लिए ढेर सारी कहानियाँ मिल जाती हैं। उन्होंने यही किया और कई ऐसी फिल्में निर्देशित कीं जो हमारे समाज का आईना हैं। चांदनी बार - मुंबई की बार गर्ल्स पर आधारित फिल्म, पेज 3 - मुंबई के उच्च समाज पर आधारित फिल्म, कॉर्पोरेट - भारत की गलाकाट कॉर्पोरेट संस्कृति का अध्ययन और ट्रैफिक सिग्नल - ट्रैफिक सिग्नल से जुड़े रोजमर्रा के जीवन और आजीविका की पड़ताल, 2008 तक उनकी कुछ फिल्में थीं।

बच्चों, मेहनत का फल जरूर मिलता है।

इसलिए जब प्रियंका ने 2008 में मधुर भंडारकर की फिल्म में काम किया, तो यह एक बड़ी खबर थी और फिल्म के साथ-साथ प्रियंका से भी बड़ी उम्मीदें थीं।

फिल्म का नाम 'फैशन' था और इसमें एक युवा मॉडल के उदय और फिर पतन की कहानी दिखाई गई थी, जो भारतीय मॉडलिंग जगत में नाम कमाती है, लेकिन परिस्थितियों के कारण बदनामी और अपमान का शिकार हो जाती है। फिल्म व्यावसायिक और समीक्षकों दोनों ही दृष्टि से बेहद सफल रही और प्रियंका को अंजली माथुर के किरदार के सशक्त और संवेदनशील चित्रण के लिए खूब सराहा गया। फिल्म में उनकी सह-कलाकार कंगना रनौत और मुग्धा गोडसे थीं और फिल्म में किसी पुरुष कलाकार का न होना एक उल्लेखनीय बात थी। कहा जाता है कि प्रियंका ने अपने किरदार को और अधिक वास्तविक बनाने के लिए मेथड एक्टिंग का अध्ययन किया था। अपने किरदार और फिल्म के प्रति समर्पण दिखाते हुए, उन्होंने लगभग 13 पाउंड वजन बढ़ाया, जिसे उन्होंने फिल्म के दौरान सुपरमॉडल के रूप में अपने बदलाव को दर्शाने के लिए घटाया। फिल्म को तीनों महिलाओं और उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं के ईमानदार चित्रण के लिए सराहा गया। इस फिल्म ने ग्लैमरस फैशन जगत के काले सच को दिखाया और यह भी कि हद से ज़्यादा महत्वाकांक्षा लोगों को किस हद तक बर्बाद कर सकती है। इस भूमिका के लिए प्रियंका ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, फिल्मफेयर पुरस्कार और आईआईएफए पुरस्कार सहित विभिन्न पुरस्कार समारोहों में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के 8 पुरस्कार जीते।

2008 प्रियंका चोपड़ा के सुनहरे साल का एक हिस्सा था, क्योंकि उनकी दूसरी फिल्म 'दोस्ताना' थी, जिसे मशहूर निर्देशक करण जौहर ने निर्देशित किया था और इसमें अभिषेक बच्चन और जॉन अब्राहम ने अभिनय किया था। एक बेहतरीन रोमांटिक कॉमेडी, इस फिल्म ने अच्छा प्रदर्शन किया और प्रियंका के लुक और अभिनय की खूब तारीफ हुई। मियामी में फिल्माई गई यह फिल्म दो दोस्तों की कहानी थी जो प्रियंका के किरदार के साथ अपार्टमेंट शेयर करने के लिए समलैंगिक होने का नाटक करते हैं। यकीन मानिए, फिल्म इससे कहीं ज्यादा घटिया थी, लेकिन फिर भी इसने अच्छा प्रदर्शन किया। सोचिए ज़रा!

प्रियंका की सफलता का सिलसिला जारी था और ऐसा लग रहा था कि उन्हें कोई रोक नहीं सकता। 2009 में, उनकी पहली फिल्म विशाल भारद्वाज द्वारा निर्देशित 'कमीने' थी, जिसमें शाहिद कपूर ने जुड़वां भाइयों की भूमिका निभाई थी। प्रियंका ने फिल्म में एक भाई की पत्नी स्वीटी का किरदार निभाया था। 'द

साइलेंस ऑफ द लैम्ब्स' में एंथनी हॉपकिंस की तरह, प्रियंका पूरी फिल्म में सिर्फ 8 दृश्यों में नजर आईं। इसके बावजूद, उन्हें इस भूमिका के लिए कई नामांकन मिले, जिनमें लगातार दूसरा प्रोड्यूसर्स गिल्ड फिल्म अवार्ड और फिल्मफेयर, स्क्रीन और आईआईएफए अवार्ड्स में नामांकन शामिल हैं। एक तेजतर्रार मराठी महिला का किरदार निभाते हुए, प्रियंका ने फिल्म में सबका दिल जीत लिया। जाने-माने समीक्षक राजीव मसंद ने कहा, "एक छोटी सी भूमिका में भी [चोपड़ा] ने शानदार प्रदर्शन किया है, जो अपनी संवादों में धाराप्रवाह मराठी का इस्तेमाल करती हैं और फिल्म के सबसे प्यारे किरदारों में से एक बनकर उभरती हैं।" इस भूमिका को प्रियंका के करियर को नया रूप देने वाली भूमिका भी कहा गया। उसी साल उनकी अगली फिल्म आशुतोष गोवारिकर द्वारा निर्देशित 'व्हाट्स योर राशी' थी। राशि का अर्थ है राशि चिन्ह। दिलचस्प कॉन्सेप्ट होने के बावजूद फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो गई। फिल्म में उनके सह-कलाकार हरमन बावेजा थे, जिन्हें अब लगभग भुला दिया गया था (जिनके साथ प्रियंका के अफेयर की भी खबरें थीं, इस बारे में आगे बात करेंगे)। फिल्म में हरमन की मुलाकात 12 अलग-अलग लड़कियों से होती है, जिनमें से हर एक की राशि अलग होती है। एक उल्लेखनीय उपलब्धि यह है कि इन सभी लड़कियों का किरदार प्रियंका ने निभाया है और एक ही फिल्म में 12 अलग-अलग किरदारों को निभाने में उनकी बहुमुखी प्रतिभा की व्यापक रूप से सराहना की गई। फिल्म का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल करने पर भी विचार किया गया था।

आपकी राशी कैसी है - रोलप्ले के लिए एकदम सही फिल्म;)

अपनी क्लास और सफलता के दम पर इंडस्ट्री में एक मजबूत हस्ती के रूप में स्थापित प्रियंका अब बॉलीवुड के शीर्ष कलाकारों में शुमार थीं। बेहतरीन निर्देशकों और सबसे आकर्षक अभिनेताओं के साथ काम करते हुए, उनका आगे बढ़ना तय था। हालांकि, 2010 उनके लिए फिल्मों के लिहाज से कुछ खास नहीं रहा। उनकी पहली फिल्म 'प्यार इम्पॉसिबल' थी, जिसमें उन्होंने उदय चोपड़ा (एक और स्टार किड, जिनका अभिनय करियर आम तौर पर उनकी कल्पना से परे होता) के साथ काम किया। फिल्म ने एक सीधे-सादे लड़के के सपनों को साकार करने की कहानी को भुनाने की कोशिश की, लेकिन यह एक आम फ्लॉप साबित हुई। उनकी अगली फिल्म 'अंजना अंजानी' थी, जिसमें उनके सह-कलाकार रणबीर कपूर थे। दोनों की स्टार पावर के बावजूद, फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही। अमेरिका में प्यार में पड़ने वाले दो आत्महत्या करने वाले युवाओं की कहानी दर्शकों का ध्यान खींचने में नाकाम रही। उनके अभिनय को भी मिली-जुली प्रतिक्रियाएं मिलीं।

अधिक सफलता

2011 में, प्रियंका ने फिल्म डॉन 2 में रोमा के रूप में अपनी भूमिका दोहराई। यह फिल्म भारत और विदेशों में बड़ी सफल रही और प्रियंका को इस फिल्म में उनके अभिनय के लिए खूब सराहना मिली। इस प्रदर्शन के बाद उन्हें एक सच्ची एक्शन हीरोइन के रूप में देखा जाने लगा। एक प्रमुख भारतीय समाचार पत्र में कहा गया था, "चोपड़ा... एक एक्शन हीरोइन के लिए एकदम सही विकल्प लगती हैं। फिल्म में उन्हें आसानी से गुंडों की पिटाई करते हुए देखकर आपको एहसास होता है कि वह बॉलीवुड की पहली सफल महिला एक्शन हीरो हो सकती हैं।"

2012

2012 में प्रियंका की पहली फिल्म अग्निपथ थी। करण जौहर द्वारा निर्मित यह फिल्म उनके पिता यश को श्रद्धांजलि थी, जिन्होंने 1990 में इसी नाम से एक फिल्म निर्देशित की थी। फिल्म में प्रियंका के साथ ऋतिक रोशन और संजय दत्त भी थे। हालांकि फिल्म में उनकी भूमिका सीमित थी, लेकिन प्रियंका ने एक चुलबुली और आकर्षक लड़की के किरदार को जीवंत कर दिया। फिल्म व्यावसायिक रूप से भी सफल रही। उनकी अगली फिल्म तेरी मेरी कहानी थी, जिसे कुणाल कोहली ने निर्देशित किया था। हालांकि फिल्म ने व्यावसायिक रूप से बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं किया, लेकिन प्रियंका के अभिनय को ज्यादातर सकारात्मक समीक्षाएं मिलीं।

2012 ने प्रियंका को एक अभिनेत्री के रूप में उनके सबसे बड़े अवसरों में से एक प्रदान किया।
अनुराग बसु ने मर्डर, गैंगस्टर और लाइफ इन अ मेट्रो जैसी व्यावसायिक रूप से सफल फिल्में निर्देशित की हैं। वे अपनी दमदार दृश्य शैली, बेहतरीन संगीत और सूक्ष्म चरित्र चित्रण के लिए जाने जाते हैं। बर्फी! में प्रियंका ने एक ऑटिस्टिक लड़की का किरदार निभाया था, जिसे रणबीर कपूर द्वारा अभिनीत मूक-बधिर बर्फी से प्यार हो जाता है। इस भूमिका के लिए प्रियंका ने विभिन्न मानसिक संस्थानों में ऑटिस्टिक लोगों के साथ समय बिताया। फिल्म को सभी कलाकारों के अभिनय और विशेष रूप से प्रियंका के अभिनय के लिए खूब सराहा गया। एक समीक्षक ने तो इसे "सिल्वर पर शारीरिक-मनोवैज्ञानिक विकलांगता की सबसे त्रुटिहीन प्रस्तुतियों में से एक"

बताया। अपने अभिनय के लिए प्रियंका को फिल्मफेयर, आईआईएफए, स्क्रीन और प्रोड्यूसर्स गिल्ड पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए नामांकित किया गया। यह प्रियंका के लिए एक यादगार वर्ष रहा, क्योंकि उन्होंने डॉन 2, एग्रीपथ और बर्फी! जैसी फिल्मों की शूटिंग पूरी की, जो आज भी सर्वकालिक सबसे अधिक कमाई करने वाली बॉलीवुड फिल्मों में शुमार हैं।

लगभग पूरी तरह से पागल हो गया था!

2013

अपने हॉलीवुड करियर की शुरुआत करते हुए, प्रियंका ने डिज्नी की फिल्म 'प्लेन्स' में एक एनिमेटेड कार, ईशानी को अपनी आवाज़ दी, जो डिज्नी की 'कार्स' फ्रैंचाइज़ी का स्पिन-ऑफ थी। यह फिल्म व्यावसायिक रूप से सफल रही। डिज्नी की प्रशंसक प्रियंका ने कहा, "मुझे लगता है कि ईशानी के किरदार में ही मैं डिज्नी राजकुमारी बनने के सबसे करीब पहुंच सकती थी।" उसी साल उनकी अगली फिल्म अमिताभ बच्चन की क्लासिक फिल्म 'ज़ंजीर' का द्विभाषी रीमेक थी, जिसमें प्रियंका के साथ टॉलीवुड अभिनेता राम चरण ने अभिनय किया था। फिल्म की शूटिंग हिंदी और तेलुगु दोनों भाषाओं में एक साथ हुई थी। दुर्भाग्य से, यह फिल्म बुरी तरह फ्लॉप हो गई, न तो इसे समीक्षकों की सराहना मिली और न ही बॉक्स ऑफिस पर सफलता।

उनकी अगली फिल्म रोशन परिवार की 'पिग्गी' थी, जिसे 'कृष फ्रैंचाइज़' भी कहा जाता है। लाखों बच्चों को यह यकीन दिलाने के लिए ज़िम्मेदार कि सुपरहीरो

असली होते हैं (और इस मायने में नहीं कि हम सब सुपरहीरो हैं), यह फिल्म ऋतिक रोशन के जिम सप्लीमेंट्स और उनके पिता राकेश के स्कैल्प पॉलिशिंग ट्रीटमेंट्स (कितने चमकदार!) का खर्च उठाती नज़र आती है। प्रियंका ने फिर से प्रिया का किरदार निभाया, एक प्यारी सी लड़की जो अपने सुपर बॉयफ्रेंड पर फिदा होने के बजाय धार्मिक भजनों की धुन पर डिस्को में नाचती है। हालांकि उनका किरदार कंगना रनौत के मुकाबले कहीं कम दिलचस्प था। खलनायक के रूप में उनकी भूमिका ने उनकी हाल ही में सामने आई बुरी शक्तियों की झलक दिखाई, जिसमें वह एक दिन में 3000 ईमेल भेज सकती हैं। ज़रा सोचिए, अगर आपका कोई क्लाइंट या बॉस ऐसा कर सकता है। आप इस दुनिया को छोड़ने के बारे में गंभीरता से सोचेंगे। अपने बेहद छोटे से रोल के बावजूद, प्रियंका को मोटी रकम मिली। इस फिल्म ने बड़ी संख्या में बच्चों को यह विश्वास दिलाने में कामयाबी हासिल की कि यह किसी न किसी तरह पिछली दो फिल्मों से अलग है और बॉक्स ऑफिस पर भी इसने जबरदस्त कमाई की।

पीजी फिल्म से सीधे आर रेटेड फिल्म में कदम रखते हुए, प्रियंका ने अपने करियर के सबसे बोल्ड गानों में से एक में अभिनय किया। संजय लीला भंसाली की फिल्मों का भव्य दृश्य देखने लायक होता है और जब प्रियंका एक दृश्य में मोहक अंदाज में अपना ब्लाउज खोलती हैं, तो मेरे पास शब्द कम पड़ जाते हैं।
समकालीन मुजरा करते हुए, प्रियंका गाने में बेहद आकर्षक लग रही हैं।

हाँ, ऐसा हुआ था

2014

2014 में एक ऐसी फिल्म आई जिसे IMDB रेटिंग के हिसाब से अब तक की सबसे खराब फिल्मों में से एक माना जा सकता है। अविश्वसनीय रूप से 2.0 की रेटिंग के साथ आई यह फिल्म कुख्यात 'गुंडे' है। इसे आधुनिक बॉलीवुड की पुरानी दोस्ती पर आधारित फिल्मों का जवाब बताया गया था, लेकिन ऐतिहासिक तथ्यों के साथ किए गए दुर्व्यवहार और बांग्लादेशी IMDB सदस्य के अभी तक शांत न हुए गुस्से के कारण IMDB पर इसकी रेटिंग गिर गई। 58,000 सदस्यों ने अपने कंप्यूटर, टैबलेट और मोबाइल का इस्तेमाल करके फिल्म की IMDB रेटिंग कम कर दी। हालांकि, इससे यह पता चलता है कि IMDB सदस्यता लेने से पहले उनमें से कहीं अधिक लोगों ने वास्तव में फिल्म देखी थी (मुझे तो पता भी नहीं था कि वहां सदस्यता भी ली जा सकती है!)। फिल्म ने व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन किया।

वह आम बार साथियों जैसा नहीं है।

प्रियंका ने 1970 के दशक के कलकत्ता में सेक्सी कैबरे डांसर नंदिता का किरदार निभाया था। उनके सह-कलाकार बॉलीवुड के विद्रोही कलाकार अर्जुन कपूर और रणवीर सिंह थे, जो अब अपनी अश्लील भाषा के लिए ज़्यादा मशहूर हैं, हालांकि हैरानी की बात यह है कि इससे उन्हें किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। बेचारे कॉमेडियन को ही अंततः सबसे ज़्यादा आलोचना झेलनी पड़ी। खैर, विषयांतर की बात है।

प्रियंका की अगली फिल्म जीवनी पर आधारित मैरी कॉम थी, जिसमें उन्होंने पांच बार की विश्व चैंपियन और ओलंपिक पदक विजेता मुक्केबाज मैरी कॉम का

किरदार निभाया था। हालांकि वह असल मैरी कॉम से कहीं ज्यादा खूबसूरत थीं, फिर भी लोगों का कहना है कि उन्होंने शानदार अभिनय किया। मेरा मानना है कि अगर प्रियंका जैसी खूबसूरत महिलाएं इस खेल को अपनातीं तो यह कहीं ज्यादा लोकप्रिय होता और आपको, प्रिय पाठक, मैरी कॉम के बारे में जानने के लिए किसी फिल्म की जरूरत नहीं पड़ती। प्रियंका ने फिल्म के लिए चार महीने तक मुक्केबाजी का प्रशिक्षण लिया और अपनी अद्भुत लगन और मेहनत से फिल्म की खूब तारीफें बटोरीं, साथ ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के कई पुरस्कार भी मिले।

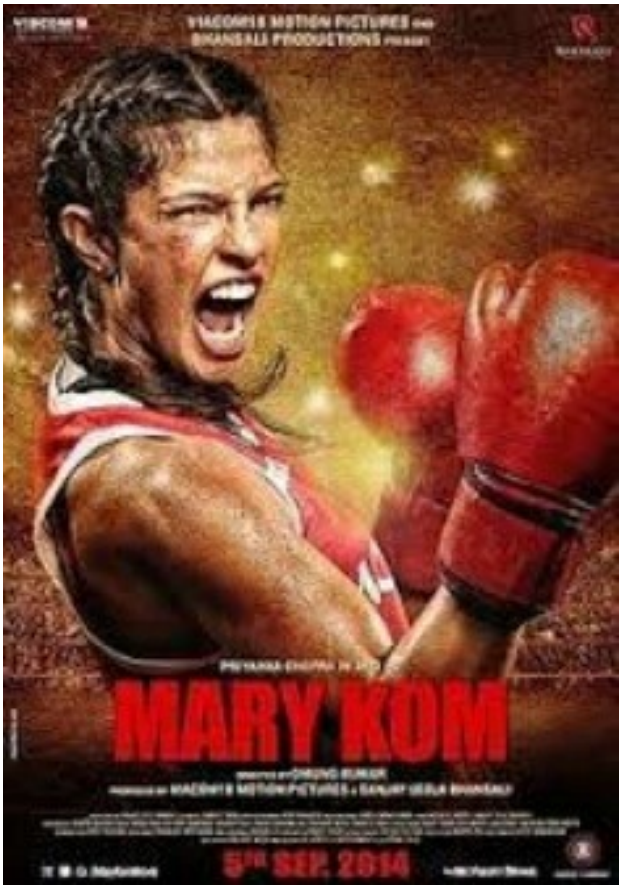

असली मैरी कॉम की तरह दिखने की पूरी कोशिश करते हुए

2015

2015 में, प्रियंका ने ज़ोया अख्तर द्वारा निर्देशित शानदार कॉमेडी- ड्रामा फिल्म 'दिल धड़कने दो' में अभिनय किया। एक छुट्टी पर क्रूज पर गए एक अव्यवस्थित परिवार की कहानी पर आधारित इस फिल्म ने व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन किया और प्रियंका को उनके अभिनय के लिए अच्छी समीक्षाएँ भी मिलीं।
2016

प्रियंका की आखिरी दो फिल्में, जो दोनों 2016 में रिलीज़ हुईं, बाजीराव मस्तानी और जय गंगाजल थीं। बाजीराव मस्तानी में उन्होंने मुख्य किरदार निभाया था, जबकि फिल्म के प्रोमो में दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह को दिखाया गया था, जो उस समय असल जिंदगी में भी एक कपल थे। अपने पति का हर सुख-दुख में साथ देने वाली एक मजबूत महिला के रूप में प्रियंका की भूमिका ने उन्हें खूब सराहना दिलाई। फिल्म जय गंगाजल 2003 में आई फिल्म गंगाजल का सीक्वल है, जिसमें अजय देवगन ने एक ऐसे पुलिस अधिकारी का किरदार निभाया था जो दंगों और अंधा करके सामूहिक न्याय करने जैसे मुद्दों से निपटता है। प्रियंका ने इस फिल्म में सख्त मिजाज पुलिस अधिकारी आभा माथुर का किरदार निभाया है, जिनका अपराध के खिलाफ कड़ा रुख है। इसी के साथ प्रियंका के विविध और शानदार बॉलीवुड करियर की हमारी समीक्षा समाप्त होती है। उन्होंने एक लंबा सफर तय किया है, लेकिन उन्हें जानने के बाद, हम उनसे भविष्य में अपनी फिल्मों और अभिनय से नए मुकाम हासिल करने की ही उम्मीद कर सकते हैं।

प्रियंका चोपड़ा की पूरी फिल्मोग्राफी

शीर्षक वर्ष निदेशक(ओं)
थमिझन 2002 मजीठ द हीरो: एक प्रेम कहानी
Spy 2003 Anil Sharma Andaaz 2003 Raj Kanwar Plan 2004 Hriday Shetty Kismat 2004 Guddu Dhanoa Asambhav 2004 Rajiv Rai Mujhse Shaadi Karogi 2004 David Dhawan Aitraaz 2004 Abbas-Mustan Blackmail 2005 Anil Devgan Karam 2005 Sanjay F. Gupta Waqt: The Race Against Time 2005 Vipul Amrutlal Shah Yakeen 2005 Girish Dhamija Barsaat 2005 Suneel

Darshan Bluffmaster! 2005 Rohan Sippy Taxi No. 9211 2006 Milan Luthria 36 China Town 2006 Abbas-Mustan Alag 2006 Ashu Trikha Krrish 2006 Rakesh Roshan Aap Ki Khatir 2006 Dharmesh Darshan
□□□ 2006 □□□□□ □□□□□ □□□□-□-□□□□: □□ □□□□□□□□□□□□
□□ 2007 □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ 2007 □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ 2007 □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□
Gonsalves 2008 E. Niwas Love Story 2050 2008 Harry Baweja God Tussi Great Ho 2008 Rumi Jaffrey Chamku 2008 Kabeer Kaushik Drona 2008 Goldie Behl Fashion 2008 Madhur Bhandarkar
Dostana 2008 Tarun Mansukhani
□□□□□□ 2009 □□□□□□□□□□ □□□□□ 2009 □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□? 2009 □□□□□□ □□□□□□□□
Pyaar Impossible! 2010 Jugal Hansraj Jaane Kahan Se Aayi Hai 2010 Milap Zaveri Anjaana Anjaani 2010 Siddharth Anand 7 Khoon Maaf 2011 Vishal Bhardwaj Ra.One 2011 Anubhav Sinha Don 2 2011 Farhan Akhtar Agneepath 2012 Karan Malhotra Teri Meri Kahaani 2012 Kunal Kohli Barfi! 2012 Anurag Basu Deewana Main Deewana 2013 K. C. Bokadia Shootout at Wadala 2013 Sanjay Gupta Bombay Talkies 2013 Multiple directors Planes 2013 Klay Hall Zanjeer 2013 Apoorva Lakhia Krrish 3 2013 Rakesh Roshan Goliyon Ki Raasleela Ram-
Leela 2013 Sanjay Leela Bhansali
Gunday 2014 Ali Abbas Zafar Mary Kom 2014 Omung Kumar Dil Dhadakne Do 2015 Zoya Akhtar Bajirao Mastani 2015 Sanjay Leela Bhansali
□□ □□□□□□ 2016 □□□□□□ □□

फिल्मफेयर पुरस्कार और नामांकन

मनोनीत
वर्ष श्रेणी परिणाम
काम
सर्वश्रेष्ठ महिला डेब्यू का पुरस्कार जीता 2004 Andaaz
सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के लिए नामांकित
सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन
जीत गया
2005 ऐतराज़ में नकारात्मक भूमिका
सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के लिए नामांकित
2009 में फैशन फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीता, 2010 में कमीने फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए नामांकित हुईं।
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए नामांकित
2012 7 खून सॉरी
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का क्रिटिक्स अवॉर्ड जीता
2013 बर्फी! सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए नामांकित, 2015 मैरी कॉम सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए नामांकित बाजीराव
2016 में सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का पुरस्कार जीता
मस्तानी

संगीत व्यवसाय

वैसे तो यह बात ज़्यादा मशहूर नहीं है, लेकिन प्रियंका ने गायिका और कलाकार के तौर पर भी काफ़ी सफल करियर बनाया है। दरअसल, उनकी पहली फ़िल्म 'तमिलन' ही उनकी पहली गायिका बनने की शुरुआत भी थी। उनके सह-कलाकार विजय ने उन्हें गुनगुनाते हुए सुना और फिर उन्हें फ़िल्म के लिए एक गाना रिकॉर्ड करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसे उन्होंने कर दिखाया। बॉलीवुड में उन्हें पार्श्व गायिका के तौर पर अपना पहला आधिकारिक गाना गाने में काफ़ी समय लगा, जो उन्हें 2014 में फ़िल्म 'मैरी कॉम' में मिला। इस गाने का नाम 'चाओरो' था।

2012 में, प्रियंका ने लॉस एंजिल्स स्थित मनोरंजन और खेल एजेंसी क्रिएटिव आर्टिस्ट्स एजेंसी के साथ करार किया, और इस तरह वह उनके साथ करार करने वाली पहली बॉलीवुड स्टार बनीं। प्रियंका ने अब तक अपने संगीत करियर में तीन सिंगल रिलीज़ किए हैं। पहला सिंगल "इन माई सिटी" था, जिसने उन्हें कई पुरस्कार और नामांकन दिलाए। इसमें मशहूर रैपर विल आई एम भी थे। वाकई, उनकी किस्मत अच्छी थी! उनका दूसरा सिंगल "एक्सोटिक" था, जिसमें अमेरिकी रैपर पिटबुल (जी हां, वही गंजे गोरे आदमी जिनके गाने भी कुछ इसी तरह के हैं) थे। यह गाना प्रियंका के लिए "इन माई सिटी" से भी ज़्यादा सफल रहा। उनका तीसरा सिंगल "आई कांट मेक यू लव मी" था। प्रियंका, बुरा मत मानना, लेकिन तुम मुझसे बहुत कुछ करवा सकती हो। यह सिंगल बॉनी रैइट के गाने का कवर था। प्रियंका के संगीत करियर को उनकी अभिनय कला जितनी सफलता न मिलने का मुख्य कारण यह है कि उन्होंने खुद कई मौकों को ठुकरा दिया है। ज़रा सोचिए, इतनी प्रतिभा होने के बावजूद? आपको अपने-अपने क्षेत्र में सफल लोगों के साथ काम करने का मौका मिलता है और आपको मना करना पड़ता है क्योंकि आप किसी और क्षेत्र में उनसे भी अधिक प्रतिभाशाली हैं। वह वाकई कुछ खास हैं, है ना? उनके आगामी एल्बम की खबरें आ रही हैं और इसमें कोई शक नहीं कि दुनिया भर में उनके प्रशंसक बेसब्री से इसका इंतजार कर रहे होंगे।

भारतीय टेलीविजन, लेखन और परोपकार

टेलीविजन
प्रियंका की भारतीय टेलीविजन शो में सबसे यादगार उपस्थिति फियर फैक्टर के भारतीय संस्करण में रही है। भारत में इस शो का नाम खतरों के खिलाड़ी है और इसके पहले दो सीज़न अक्षय कुमार ने होस्ट किए थे, जिन्हें अपने स्टंट खुद करने के शौक के कारण भारत का जैकी चैन कहा जाता है। प्रियंका ने भी तीसरे सीज़न में अपने अधिकांश स्टंट खुद किए। शो की रेटिंग पिछले दो सीज़न से कहीं ज़्यादा रही और इसे टेलीविजन पर सबसे प्रभावशाली डेब्यू के लिए इंडियन टेली अवार्ड मिला।

लिखना
क्या ऐसी कोई चीज है जो यह लड़की नहीं कर सकती? अभिनय, गायन और अब लेखन भी, ये सभी क्षेत्र उसने आजमाए हैं और इनमें अपनी प्रतिभा साबित की है। 2009 में, उसने हिंदुस्तान टाइम्स के लिए कॉलम लिखना शुरू किया और लगभग 50 कॉलम लिखे। उसके कॉलमों ने महिलाओं द्वारा झेली गई समस्याओं को उजागर किया है। महिला जननांग विकृति, शहरी सुरक्षा और बालिका शिक्षा कुछ ऐसे बड़े विषय हैं जिन्हें उसने अपने लेखन के माध्यम से उठाया है। हाल ही में, वह Elle.com के लिए मासिक कॉलम लिखती है, जहां अब उसके लेख वैश्विक पाठकों तक पहुंचते हैं।

परोपकार
प्रियंका चोपड़ा राष्ट्रीय महत्व के कई मुद्दों का समर्थन करने के लिए जानी जाती हैं। इनमें महिलाओं के मुद्दे, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण शामिल हैं। उनका फाउंडेशन - "प्रियंका चोपड़ा फाउंडेशन फॉर हेल्थ एंड एजुकेशन" देश भर की वंचित लड़कियों को शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहायता प्रदान करने के लिए काम करता है।

****

sjeet